>

Title: Regarding danger to the existence of the holy river Ganges.

श्री रेवती रमण सिंह (इलाहाबाद): उपाध्यक्ष महोदय, मैं एक बहुत ही महत्वपूर्ण तात्कालिक सवाल पर आपका, सदन का और सरकार का भी ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। गंगा नदी केवल एक नदी नहीं है बल्कि वह भारत की संस्कृति का प्रतीक है। भारत सरकार के प्रधान मंत्री नें गंगा बेसिन प्राधिकरण बनाने का काम किया है। उससे जनता में खुशी हुई कि कम से कम प्रधान मंत्री जी ने देर से ही सही लेकिन गंगा को याद किया।

मान्यवर, आपसे एक आग्रह है कि इस पर बोलने के लिए कम से कम मुझे पांच मिनट का समय जरूर दीजिएगा। यह कोई इंडिविजुअल विषय नहीं है। करोड़ों लोगों के जनजीवन से जुड़ा हुआ सवाल है।...(व्यवधान) बंसल साहब, सुनकर तो जाइए। इतनी जल्दी में न रहिए।...(व्यवधान)

संसदीय कार्य मंत्री, विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्री (श्री पवन कुमार बंसल): बीएसी शुरु होने वाली है।

श्री रेवती रमण सिंह : इनसे हम आश्वासन चाहेंगे। महोदय, मैं आपसे आग्रह कर रहा हूं कि प्रधान मंत्री जी ने गंगा बेसिन प्राधिकरण बनाने का काम किया है लेकिन आज हालत क्या है? गंगा की अविरल धारा होनी चाहिए लेकिन गंगा पर इतने सारे बांध बने हैं। एक बांध टेहरी पर, एक हरिद्वार पर, एक नरौरा पर और अभी बांधों की शृंखला बनाने की योजना उत्तराखंड सरकार और केन्द्र सरकार की सहमति से चल रही है। मैं चाहता हूं कि अगर उनको बिजली की जरुरत है तो उतनी बिजली केन्द्र सरकार अपने कोटे से दे दे लेकिन गंगा को समाप्त न कराए। गंगा समाप्त हो गई तो भारत की संस्कृति समाप्त हो जाएगी, यहां की सभ्यता समाप्त हो जाएगी।

लेकिन हमें अफसोस है कि भारतीय जनता पार्टी जो अपने को भारतीय संस्कृति का प्रतीक कहते हैं, वहां उत्तराखंड में बीजेपी की सरकार है और इन लोगों ने गंगा को समाप्त कर देना निश्चित कर रखा है। यदि यही हालत रही तो ग्लेशियर पहले ही 30 किलोमीटर हर साल गल रहा है और हम गंगा को बांधकर चार बांध और ये बना रहे हैं और वह भी भागीरथी पर बना रहे हैं। एक बांध इनका भैरोघाटी-एक पर है जो गंगोत्री से मात्र 9 कि.मी. की दूरी पर है। भैरोघाटी-दो विचाराधीन भैरोघाटी-एक के तुंत बाद लुहारीघाट-पाला निर्माण प्रारम्भ हो गया है। पाला-मनहेरी निर्माण हेतु तैयार लुहारीपाला के तुंत बाद गंगोत्री के पास उत्तराखंड की सरकार ने यह किया है कि इतनी बांधों की शृंखला बना दे रहे हैं। अगर कुल पानी आज आप देखें और मान्यवर आप भी बिहार से आते हैं, बिहार में पहले का गंगा का पाट इतना चौड़ा था, अब आज देखें कि वहां पर गंगा का पाट इतना कम हो गया है। पहले गंगा में बड़े-बड़े स्टीमर चलते थे, आज वहां पर नाव चलना भी दूभर हो गया है।

15.00 hrs.

इलाहाबाद से नाले की तरह गंगा बह रही है और काला पानी बह रहा है।

मान्यवर, मैं आपके माध्यम से इस सरकार और केन्द्र सरकार से आग्रह करूंगा। आज भाजपा के नेता मौजूद नहीं हैं, श्री शरद जी, यहां मौजूद हैं, वह एनडीए के कन्वीनर हैं। मैं शरद जी से आग्रह करूंगा कि कृपया इस तरफ ध्यान दें और भैरोघाटी पर इन लोगों ने जो शृंखला भागीरथी पर बनाई है। आप कम से कम इस बारे में आश्वासन दे दीजिए। मैं शरद जी से आग्रह करूंगा कि कृपया आप इसमें इंटरवीन करें और जो बांध की शृंखला उत्तराखंड में बना रहे हैं, उसे समाप्त करने का काम कराइये।...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : जो सदस्य इस विषय से अपने आपको सम्बद्ध करना चाहते हैं, वे अपने नाम की स्लिप्स टेबल पर भेज दें।

श्री शरद यादव (मधेपुरा): उपाध्यक्ष जी, गंगा के बगैर देश की कल्पना करना बेकार है। श्री रेवती रमण जी ने जो सवाल उठाया है, उससे पूरा सदन चिंतित है। मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि इस मामले में भारत सरकार को तत्काल कार्रवाई करनी चाहिए। गंगा के बगैर इस देश का कोई मतलब नहीं है। इसलिए मेरी विनती है, बंसल जी यहां बैठे हैं। माननीय सदस्य ने यहां बहुत गंभीर बात उठाई है और आपको इस पर तत्काल कोई न कोई रास्ता निकालना चाहिए। वास्तव में यह बहुत गम्भीर समस्या है।

श्री पवन कुमार बंसल : माफ कीजिए, मैं कोई गलत स्टेटमैन्ट नहीं देना चाहता। लेकिन मेरा ख्याल यह है कि इसमें केन्द्र ने बंधों पर रोक लगा दी है।

श्री रेवती रमण सिंह : एक बंधा है, जिस पर काम चल रहा है। दो पर रोक लगाई है। ...(व्यवधान)

श्रीमती विजया चक्रवर्ती (गुवाहटी): मिनिस्टर साहब, आप बाद में स्टेटमैन्ट दीजिए।

श्री रेवती रमण सिंह : नहीं, अभी आश्वासन दे रहे हैं।...(व्यवधान)

श्री पवन कुमार बंसल : अगर वह बात कर रहे थे तो मैं समझता हूं कि जीरो ऑवर में अगर मुझे किसी चीज के बारे में थोड़ी सी जानकारी है तो मैं बता दूं।

श्री रेवती रमण सिंह : आप बोलिये और बताइये।

श्री पवन कुमार बंसल : वह कहती हैं कि मैं न बोलूं।...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : श्री विजय बहादुर सिंह, श्री राकेश पाण्डेय और श्री कपिल मुनि करवारिया अपने आपको इस मामले से सम्बद्ध करते हैं।

श्री पवन कुमार बंसल : महोदय, वैसे यह विषय मेरा नहीं है। लेकिन मुझे मालूम है, चूंकि मैं उन मीटिंग्स में हाजिर होता था। जो नेशनल गंगा रिवर बेसिन अथारिटी बनाई गई है, प्रधान मंत्री उसमें खुद दिलचस्पी ले रहे हैं, मीटिंग्स को प्रिसाइड ओवर करते हैं। इसके बाद एक सब-कमेटी बनी थी, सब-कमेटी ने फैसला किया था और उसमें सरकार से बाहर गैर-सरकारी संस्थाएं हैं। उन्होंने एक सिफारिश दी थी और उनकी सिफारिश को मानते हुए केन्द्र सरकार ने उन पर रोक लगा दी थी। मुझे ठीक से याद नहीं कि उत्तराखंड की सरकार को उसके लिए किसी ढंग से बिजली की पूर्ति करने के लिए कुछ सोचा जा रहा था। मेरे ख्याल से उसमें ऐसा है। मैं इससे ज्यादा कुछ नहीं कह सकता है। मैंने यह भी जो बोला है, मुझे एहसास है कि मैं क्या बोल रहा हूं, लेकिन ऑफिशियल तौर पर मैं यह कह सकता हूं कि जो आपने कहा है, इसकी पूरी सूचना मैं जहां जरूरत है, वहां भिजवा दूंगा। जितना मैंने कह दिया है, उतना ही कहा जा सकता है। माननीय सदस्य श्री रेवती रमण सिंह जी ने जो यहां कहा है, उसकी सूचना जहां-जहां आवश्यक है, मैं वहां पहुंचा दूंगा।

श्री रेवती रमण सिंह : बहुत-बहुत धन्यवाद।